

अभिमत



आर्थिक विषमता

विषमता के कारण अधिकतर लोग शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य जलरी सुविधाओं के लिए परेशान हैं। सब चाहते हैं कि अमीर लोगों की संख्या घटे, लेकिन उसी तरह गरीबी भी घटे। सतर और अस्ट्री के दशक में तकालीन प्रधानमंत्री फँदिरा गांधी ने गरीबी हटाऊ का नारा दिया। इस जुमले से वर्षों तक बुनाव जीता गया, परन्तु कटु सत्य यह है कि गरीबी का अभिशप आज भी झेलना पड़ रहा है। एक तरफ आर्थिक शक्ति बनने का दावा किया जाता है, दूसरी तरफ प्रति व्यक्ति आय नहीं बढ़ने से संपन्नता झूठी साबित हो रही है।

भारत दुनिया की दौरी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। आर्थिक संपन्नता पर गौरवान्वित होना अवृचित नहीं है। विडम्बना यह है कि अमीरों की बढ़ती संख्या और उनकी संपत्ति से आर्थिक विषमता का संकट उत्पन्न हो गया है। एक प्रतिशत अमीर लोगों के पास देश की 40 प्रतिशत संपत्ति है। निकन्व वर्ष के 50 प्रतिशत लोगों के पास मात्र तीन प्रतिशत संपत्ति है तथा वह और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। इस विषमता के कारण अधिकतर लोग शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य जलरी सुविधाओं के लिए परेशान हैं। सब चाहते हैं कि अमीर लोगों की संख्या घटे, लेकिन उसी तरह गरीबी भी घटे। सतर और अस्ट्री के दशक में तकालीन प्रधानमंत्री फँदिरा गांधी ने गरीबी हटाऊ का नारा दिया। इस जुमले से वर्षों तक बुनाव जीता गया, परन्तु कटु सत्य यह है कि गरीबी का अभिशप आज भी झेलना पड़ रहा है। एक तरफ आर्थिक शक्ति बनने का दावा किया जाता है, दूसरी तरफ प्रति व्यक्ति आय नहीं बढ़ने से संपन्नता झूठी साबित हो रही है।

भारत दुनिया की दौरी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। आर्थिक संपन्नता पर गौरवान्वित होना अवृचित नहीं है। विडम्बना यह है कि अमीरों की बढ़ती संख्या और उनकी संपत्ति से आर्थिक विषमता का संकट उत्पन्न हो गया है। एक प्रतिशत अमीर लोगों के पास देश की 40 प्रतिशत संपत्ति है। निकन्व वर्ष के 50 प्रतिशत लोगों के पास मात्र तीन प्रतिशत संपत्ति है तथा वह और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। इस विषमता के कारण अधिकतर लोग शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य जलरी सुविधाओं के लिए परेशान हैं। सब चाहते हैं कि अमीर लोगों की संख्या घटे, लेकिन उसी तरह गरीबी भी घटे। सतर और अस्ट्री के दशक में तकालीन प्रधानमंत्री फँदिरा गांधी ने गरीबी हटाऊ का नारा दिया। इस जुमले से वर्षों तक बुनाव जीता गया, परन्तु कटु सत्य यह है कि गरीबी का अभिशप आज भी झेलना पड़ रहा है। एक तरफ आर्थिक शक्ति बनने का दावा किया जाता है, दूसरी तरफ प्रति व्यक्ति आय नहीं बढ़ने से संपन्नता झूठी साबित हो रही है।

भारत दुनिया की दौरी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। आर्थिक संपन्नता पर गौरवान्वित होना अवृचित नहीं है। विडम्बना यह है कि अमीरों की बढ़ती संख्या और उनकी संपत्ति से आर्थिक विषमता का संकट उत्पन्न हो गया है। एक प्रतिशत अमीर लोगों के पास देश की 40 प्रतिशत संपत्ति है। निकन्व वर्ष के 50 प्रतिशत लोगों के पास मात्र तीन प्रतिशत संपत्ति है तथा वह और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। इस विषमता के कारण अधिकतर लोग शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य जलरी सुविधाओं के लिए परेशान हैं। सब चाहते हैं कि अमीर लोगों की संख्या घटे, लेकिन उसी तरह गरीबी भी घटे। सतर और अस्ट्री के दशक में तकालीन प्रधानमंत्री फँदिरा गांधी ने गरीबी हटाऊ का नारा दिया। इस जुमले से वर्षों तक बुनाव जीता गया, परन्तु कटु सत्य यह है कि गरीबी का अभिशप आज भी झेलना पड़ रहा है। एक तरफ आर्थिक शक्ति बनने का दावा किया जाता है, दूसरी तरफ प्रति व्यक्ति आय नहीं बढ़ने से संपन्नता झूठी साबित हो रही है।

सीएम ने शिकायतों का निस्तारण न होने पर जताई

लद्धपुर

हमारे संवाददाता

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बचुंगल माध्यम से सीएम हेल्प लाईन 1905 की समीक्षा करते हुए 6 माह से अधिक लंबिव शिकायतों पर नाराजगी अक्त करते हुए अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि प्रकरणों से संतुलित होने के लिए बाल बुनाव जीता गया, परन्तु कटु सत्य यह है कि गरीबी का अभिशप आज भी झेलना पड़ रहा है। एक तरफ आर्थिक शक्ति बनने का दावा किया जाता है, दूसरी तरफ प्रति व्यक्ति आय नहीं बढ़ने से संपन्नता झूठी साबित हो रही है।

